Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

भक्ति-साहित्य के सम्राट महाकवि तुलसीदास जी का हिन्दी भक्ति-साहित्य में योगदान

Dr. Okendra*

PhD Hindi Literature, Department of Hindi, Uttarakhand

***सारांश** – हिंदी साहित्य के महान कवि संत तुलसीदास का जन्म संवत् 1956 की श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन अभुक्तमूल नक्षत्र में हुआ था। इनके पिता का नाम आतमा रामदुबे व माता का नाम हुलसी था। जन्म के समय तुलसीदास रोये नहीं थे अपितु उनके मुंह से राम शब्द निकला था। साथ ही उनके मुख में 32 दांत थे। ऐसे अद्भुत बालक को देखकर माता–पिता बहुत चिंतित हो गये। माता हुलसी अपने बालक को अनिष्ट की आशंका से दासी के साथ ससुराल भेज आयीं और स्वयं चल बसीं। फिर पांच वर्ष की अवस्था तक दासी ने ही उनका पालन पोषण किया तथा उसी पांचवें वर्ष वह भी चल बसीं। अब यह बालक पूरी तरह से अनाथ हो गया। इस अनाथ बालक पर संतश्री नरहयान्नंद जी की नजर पड़ी उन्होंने बालक का नाम रामबोला रखा और अयोध्या आकर उनकी शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था की। बालक बचपन से ही प्रखर बुद्धि का था। गुरुकुल में उनको हर पाठ बड़ी शीघ्रता से ही याद हो जाता था। नरहरि जी ने बालक को राममंत्र की दीक्षा दी और रामकथा सुनाई।*

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी के द्वारा भगवान श्रीराम के 'राम-भक्ति' स्वरूप का वर्णन किया गया है जिसमें सम्पूर्ण विश्व में श्रीराम जी के दिव्य स्वरूप, इनके चरित्रों का वर्णन किया गया है। भगवान श्रीराम की 'रामकथा' चरित्र भी है और लीला भी है। इसे देखते हुए हमें उसे दोनों ही द्रष्टिकोण से निहारना पड़ेगा यही कारण है कि मनुष्य के रूप में वह चरित्र है, जबकि ब्रहम के रूप में वह लीला है। ऐसी स्थिति में हमें अपनी ज्ञान चक्षु की खिड़ की खोलकर देखना होगा कि आकाश जितना विशाल और अनन्त दिख रहा है, उसी स्वरूप में सभी कवियों ने भगवान श्रीराम भक्तिसाहित्य, रामकाव्य, रामभक्तिकाव्य-साहित्य का वर्णन किया है-

"हरि अनंत, हरि कथा अनंता"

अर्थात् इस संसार में मच्छर से लेकर गरूड़, पक्षी सभी आकाश में उड़ान भरें परन्तु आकाश का अन्त पाना दुष्कर नहीं असम्भव है ठीक वै सा ही सत्य "श्रीरामकथा-साहित्य" पर लागू होता है इसी क्रम में विश्वामित्र जी का कथन है-

'चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्' – 'रामायण शत कोटि आपारा'

अर्थात् हम कह सकते हैं कि रामायण शतकोटि है और वह आँकड़ा भी पर्याप्त नहीं है, और न ही समुचित है, इस प्रकार रामायण अपार है। अतः सारांश यह निकलता है कि-

"आदि अन्त कोउ जासु न पावा"

काश! तुलसीदास जी को भगवान श्रीराम अवश्य ही मिले हों! चूँकि तुलसीदास जी ने भगवान श्रीराम के जिस प्रकार अलौकिक स्वरूपों का वर्णन, श्री रामकथा के रूप में अपनी मार्मिक रचनाओं में किया है उन जैसा संदर्भ! हमें अन्य किसी भी रचना, गान, समू हपाठन, समूहश्रवण इत्यादि में हमें देखने को नहीं मिलता है निःसंदे ह! 'रामकथा' का

उद्गम चाहे कोई भी हो, परन्तु हम कह सकते हैं कि यदि 'हिन्दी-साहित्य' के सम्राट, महाकवि 'तु लसीदास' जी नहीं हो ते तो हम 'रामकथा' के इतने निकट कभी नहीं पहुँच पाते

और यह सम्राट महाकवि तुलसीदास जी ही हैं जिनकी रचनाओं में हम श्रीराम के साक्षात् दर्शनों की अनुभूति की प्राप्ति हम कर पाते हैं ।

www.ignited.in

कूट शब्द- श्रीराम भक्ति-साहित्य, गवेषणापूर्ण, शतकोटि, रामकाव्य-परम्परा, सेवक-सेव्य, श्रव्य-काव्य, दृश्य-काव्य।

हिन्दी भक्ति-साहित्य में 'रामकाव्य'

भगवान श्रीराम समग्र भारतीय संस्कृति के प्रतीक पुरूष हैं। यदि हमारी भारतीय संस्कृति चेतना स्वरूप श्रीरामकथा को देखा जाए तो यह ईसा पूर्व पाँचवी शताब्दी में जन्म लेकर वर्तमान आज तक निरन्तर हमारी भारतीय सं स्कृति के साथ-साथ विश्व की विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं इत्यादि में देखने को मिलती है। परन्तु किसी को भी सटीक जानकारी नहीं है कि महर्षि वाल्मिकी किस कालावधि में गए तथा भगवान श्रीराम जी के कालावधि में भी मत-मतांतर है। कुछ साहित्यक विद्वान ऐसा मानते हैं कि महर्षि वाल्मिकी जी से पूर्व भी 'रामकथा' का गान होता रहा है और वह कथा श्रुति परम्परा के रूप में प्रचलित थी और वाल्मिकी जी ने उन्हें केवल कण्ठस्थ करने का ही कार्य किया है ऐसी मान्यताओं के सन्दर्भ में हम कभी परिशुद्ध सत्य की प्राप्ति नहीं कर पाएँगें। किन्तु हाँ 'रामायण' के सर्वप्रथम रचियता आदिकवि महर्षि वाल्मिकी जी ही थे ऐसी हमारी अवधारणा आज भी है और हमेशा निरन्तर बनी भी रहेगी।

उक्तानुसार, हम निःसंदेह कह सकते हैं कि काश तुलसीदास जी को भगवान श्रीराम अवश्य ही मिले हों! चूँकि तुलसीदास जी ने भगवान श्रीराम के जिस प्रकार अलौकिक स्परूपों का वर्णन, श्री 'रामकथा' के रूप में अपनी मार्मिक रचनाओं में किया है उन जैसा संदर्भ हमें अन्य किसी भी रचना, गान, समूहपाठन, समूहश्रवण इत्यादि में हमें देखने को नहीं मिलता है निःसंदेह रामकथा का उद्‌गम चाहे कोई भी हो, परन्तु हम कह सकते हैं कि यदि हिन्दी साहित्य के सम्राट महाकवि तुलसीदास जी नहीं होते तो हम 'रामकथा' के इतने निकट कभी नहीं पहुँच पाते।[1]

हिन्दी-साहित्य में 'रामकाव्य' का पूर्ण विकास महाकवि तुलसीदास जी की रचनाओं में हमें देखने का मिलता है। 'रामकाव्य' के कवियों पर विचार करने से पूर्व हमें 'राम-भक्ति' के विकास स्परूप का वर्णन करना सर्वप्रथम उचित होगा।[2] भगवान श्री राम का महत्व हमें सर्वप्रथम 'वाल्मिकी-रामायण' में देखने को मिलता है इसकी निंधारित तिथी ईसा की 400-600 वर्ष पूर्व मानी जाती है। वाल्मिकी कृत 'रामायण' में प्रथम और सप्तम काण्ड प्रक्षिप्त माने गये हैं, परन्तु द्वितीय काण्ड से सप्तम काण्ड मौलिक रूप में प्रमाणिक माने गये हैं, यद्‌यपि उनकी भी वास्तविकता में कही-कहीं पर सन्देह सा प्रतीत होता है परन्तु फिर भी अधिकतर इसका रूप विकृत नहीं हो पाया है। इस प्रकार 'वाल्मिकी रामायण' का द्रष्टिकोण लौकिक है। इसकी सबसे बड़ी विषेशता यह है कि इसी 'रामायण' 'रामकाव्य' के कारण ही हम धर्म के यथार्थ रूपों का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। संदर्भित ग्रन्थ धार्मिक न होने के कारण अन्धविश्वास और भावोन्मेष से रहित है।[3]

अतः इसमें हम लौकिक द्रष्टिकोण से धर्म का एक रूप भी देख सकते हैं। भगवान श्रीराम के स्परूपों का वर्णन हम एक महापुरूष के रूप में भी कर सकते हैं चूँकि भगवान श्रीराम प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मनुष्य ही हैं, इसी कारण उनमें देवत्व की छाया कहीं पर भी नहीं दिखाई देती है। इसी प्रकार श्रीराम एक महापुरूष अवश्य हैं परन्तु अवतार नहीं। इसी प्रकार 'वाल्मिकी रामायण' में वैदिक देवताओं को ही मान्य किया गया है जिनमें कात्तिकेय और कुबेर तथा लक्ष्मी जी के साथ उमा जी प्रमुख हैं। इसी क्रम में शिव और विष्णु जी का भी स्थान प्रमुख है परन्तु उतना ही कि जितना कि 'ऋग्वेद' में है। अतः 'वाल्मिकी रामायण' में विष्णु और श्रीराम का कोइ्र सम्बन्ध नहीं है और न ही श्रीराम अवतार रूप में ही हैं वे केवल मनुष्य हैं, महात्मा हैं, तथा धीरोदात्त नायक हैं।[4]

'वाल्मिकी-रामायण' के प्रक्षिप्त अंशों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश देवों के रूप में समान प्रकार से मान्य हैं और श्रीराम अंशतः विष्णु जी के ही अवतार हैं।[5] इस प्रकार 11वीं शताब्दी तक भगवान श्रीराम के स्वरूप का परिवर्द्धन होता रहा और इसी समय 'राम-भक्ति' ने एक सम्प्रदाय का रूप धारण किया जिसमें श्री रामानन्द जी ने 14वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इसी मत का प्रचार प्रसार किया और आगे चलकर 'राम-भक्ति' के इस प्रवाह को 'हिन्दी-साहित्य' के महाकवि श्री 'तुलसीदास' जी ने अपनी जीवंत रचनाओं के रूप में उक्त 'राम-भक्ति' प्रवाह को प्रवाहित रखा।[6]

श्री राम भक्ति-साहित्य और महाकवि तुलसीदास

महाकवि तुलसीदास जी ने रामानन्द जी के सिद्वान्तों को लेकर अपनी 'राम-भक्तिमय' प्रतिभा से जो 'श्रीराम भक्ति-काव्य' लिखा है उसका महत्त्व न केवल उनके काल में, वरन् परवर्ती काल में भी स्थायी सिद्व होता रहा है। इस प्रकार

[1] अयोध्या का रावण और लंका के राम, डॉ. दिनकर जोशी और नवनीत ठक्कर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0-१,२

[2] हिन्दी साहित्य का इतिहास और उसकी समस्याएँ, डॉ. योगन्द्र प्रताप सिंह, वाणी प्रकाशन, पृ0सं 0-206

[3] हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, आठवां संस्करण, प्रकाशन वर्ष-2014 एवं 2017, पृ0सं0-319

[4] वही पृ0सं0-319

[5] वही पृ0सं0-320

[6] हिन्दी साहित्य का इतिहास और उसकी समस्याएँ, डॉ. योगन्द्र प्रताप सिंह, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0-206

www.ignited.in

उनकी रचनाओं में 'राम-भक्ति' की अबाध धारा प्रवाहित होती रही। यह उनकी 'भक्तिमय' रचनाओं का ही कारण है जो हमें आज भी उनकी रचनाओं में भगवान 'श्रीराम' के दर्शन प्राप्त होते हैं। हिन्दी-साहित्य में तत्कालीन महाकवि तुलसीदास जी की 'राम-भक्तिमय' रचनाओं का ही यह प्रसाद है कि हमें भगवान श्री राम के 'जीवन-चरित्र' के साक्षात दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। उनकी प्रतिभा और काव्य-कला इतनी उत्कृष्ट और प्रमाणिक है कि आज भी हमें उनके समानता की 'श्रीराम-भक्तिमय' कोई भी रचना प्राप्त नहीं होती है जो कि इतनी प्रसिद्धि प्राप्त कर सके।[7]

संक्षेप में 'रामभक्तित-साहित्य' की विषेशताएँ इस प्रकार हैं-

1- राम काव्य-साहित्य ने वैष्णव धर्म के आदर्शों को सामने रख कर से वक-सेव्य, भक्ति-भाव पर जोर दिया है।

2- ज्ञान और कर्म से भक्ति श्रेश्ठ समझी गयी है।

3- रामभक्ति काव्य-साहित्य में सभी प्रकार की रचना-शैलियों का प्रयोग किया गया है जिसमें श्रव्य-काव्य के साथ-साथ द्रश्य-काव्य भी पाया जाता है। और मुक्तक रचनाओं के साथ-साथ प्रबन्ध-काव्य भी पाया जाता है।

इस प्रकार राम-काव्य के सबसे प्रधान कवि, महाकवि तुलसीदास जी ही हैं, इन्होंने अपनी प्रतिभा के प्रकाश में 'राम-काव्य' को ही नहीं वरन् समस्त 'हिन्दी-साहित्य' को ही आलौकिक कर दिया है। अभी तक हिन्दी-साहित्य के इतिहास में 'तुलसीदास' जी ही वह प्रथम कवि हैं, जिन्होंने दोहा और चैपाई में 'राम-कथा' को पहली बार प्रस्तुत किया है।[8]

भक्ति-साहित्य के सम्राट महाकवि तुलसीदास

महाकवि 'तुलसीदास' जी ही 'रामकथा-साहित्य' के सम्राट हैं। इन्होंने भगवान श्रीराम के चरित्र का आधार लेकर मानव-जीवन की जितनी व्यापक और सम्पूर्ण समीक्षा की, उतनी 'हिन्दी-साहित्य' के किसी भी कवि ने नहीं की। इन्होंने इस समीक्षा के साथ-साथ लोक-शिक्षा का भी ध्यान रखा और मानव जीवन में ऐसे आदर्शों की स्थापना की है जो विश्वजनित है, जो समय के प्रवाह में नहीं बह समकता है। इन्होंने उपर्युक्त इन आदर्शों की भक्ति पर जो अपनी श्रीराम-भक्ति के महान स्वरूप की इतनी अच्छी विवेचना की है कि वह तत्कालीन धार्मिक अव्यवस्था में पथ-प्रदर्शन का काम कर गई और इसी भक्ति में नीति की धारा भी मिली हुई है।[9]

इसी संदर्भ में मैथिलीशरण गुप्त जी की निम्नांकित पंक्तियों को मैं यहाँ पर उदाहरण स्परूप उद्धत करना चाहूँगा जो "श्रीराम के जीवन-चरित्र की महत्ता को", महाकवि तुलसीदास जी के बाद में भी कवियों द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रतिपादन करती रही हैं-

"राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है।

कोई कवि न बन जाये सहज सम्भाव्य है।।"[10]

इस प्रकार महाकवि 'तुलसीदास' जी ने विश्वव्यापी विचारों की इतनी गवेषणापूर्ण व्याख्या की है कि हम उन्हें अपनी हिन्दी-साहित्य के सर्वोच्च स्थान पर आसित कर, अधिष्ठित करने पर हम अपने आपको गौरवान्वित समझते हैं। इसी क्रम में महाकवि तुलसीदास जी का जीवन-चरित्र सम्पूर्ण रूप से हमारे सामने अभी तक प्रमाणिक होकर नहीं आया है, स्वयं तुलसीदास जी ने भी अपना विस्तृत विवरण, जीवन परिचय नहीं दिया है यद्यपि उनकी रचनाओं में ही यत्र-तत्र कुछ विवरण बिखरा हुआ सा प्राप्त होता है किन्तु इनका संदर्भित उपर्युक्त यह विवरण भी परिचय के रूप में नहीं, बल्कि इनकी भगवान श्रीराम के अलौकिक स्वरूप की महिमा, दैन्य और इनके निराश हृदय में श्रीराम के बसे होने की भावनाओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त करने से प्रकाशित होता है। उपर्युक्त विवरणों से शोधार्थी को यह प्रतीत होता है कि यदि तुलसीदास जी को आत्म-ग्लानि न होती तो शायद वह अपने विषय में इतना भी अपनी रचनाओं में न लिखते। अतः अनुसंधान स्वरूप हमें इनके बारे में जो कुछ भी प्राप्त होता है चाहे कि वह इनकी रचनाओं का ही माध्यम क्यों न हो वही हमारे लिए प्रमाणिक है।[11]

शोधार्थी द्वारा संक्षेप में तुलसीदास जी द्वारा दिया गया आत्म-चरित्र इनके द्वारा रचित रामकाव्य, श्रीराम-साहित्य के माध्यम से आपके समक्ष अति संक्षेप में प्रस्तुत कर रहा है-

[7] भारतीय साहित्य पर रामायण का प्रभाव, डॉ. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, आर्य प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0सं0-9

[8] हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, आठवां संस्करण, प्रकाशन वर्ष-2014 एवं 2017, पृ0सं0-321,322

[9] हिन्दी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2017, पृ0सं0-57,95

[10] विश्वभाषा साहित्य और रामकथा, डॉ. सरोज गुप्ता, अनुज्ञा बुक्स पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण-2017, पृ0सं0-94,101

[11] हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, आठवां संस्करण, प्रकाशन वर्ष-2014 एवं 2017, पृ0सं0-322,323

www.ignited.in

देव दनुज नर नाग खग प्रेरित पितर गंधर्ब।

बंदउँ किंनर जननिचर कृपा करहु अब सर्ब।।[12]

अर्थात् महाकवि तुलसीदास जी उपर्युक्तत रचना में कहते है कि सर्वप्रथम मैं सभी देवता, दैत्य, मनु श्य, पक्षी, गं धर्व, किन्न्न और निषाचर इत्यादि आप सभी को मैं प्रणाम करता हूँ। आप सभी मुझ पर अपनी कृपा बनाये रखना।

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।

बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।

इसी क्रम में तुलसीदास जी कहते हैं कि जगत में जितने भी जड़ और जीव हैं अर्थात् संसार में जितने भी जीव जन्तु हैं और जिन्होंनें मुझे श्रीराम का बोध कराया है मैं उन सभी के चरणकमलों की सदा दोनों हाथ जोड़कर वन्दना करता हूँ। अर्थात् तुलसीदास जी उपर्युक्त रचना के माध्यम से यह ब्यक्त करना चाहते हैं कि संसार में जितने भी जीव-जन्तु और मनुष्य हुए हैं जिन्होंने मुझे श्रीराम जी का बोध कराया है, राममार्ग दिखलाया है मैं उन्हें अपने समर्पित मन से जीवन भर उनके चरणों की स्तुति करता रहूँगा।

आकर चारि लाख चैरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी।।

सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

उपर्युक्त इसी क्रम में तुलसीदास जी भगवान श्रीराम की स्तुति में इतना प्रवाहित हो जाते हैं कि उपर्युक्तानुसार कहते हैं- चैरासी लाख योनियों में चार प्रकार के (स्वेदज, अण्डज, उद्विज्ज, जरायुज) जीव जल, पृथ्वी और आकाश में रहते हैं उन सब में श्रीरामस्वरूप के इस सीताराममय रूप जानकर मैं उन सभी को हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। उनकी बन्दना करता हूँ।

करन चहउँ रघुपति गु न गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा।।

सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राउ।।

अर्थात् तुलसीदास जी भगवान के स्तुति में इतने खो जाते हैं कि वह अपने आप को घृणित, तुच्छ और असहाय महसूस करते हैं और उपर्युक्त पंक्ति में कहते हैं कि मैं भगवान श्रीराम, रघुनाथ के गुणों का वर्णन करना चाहता हूँ, परन्तु मुझ, तुच्छ तुलसीदास की बुद्धि इतनी छोटी है कि मैं उनके स्वरूप को चित्रार्थ नहीं कर पा रहा हूँ, श्रीराम जी का चरित्र अथाह है, इसके लिए मुझे उपाय का एक भी अंग, अर्थात् कुछ लेशमात्र भी उपाय नहीं सूझ रहा है। मेरा मन और बुद्धि कंगाल है किन्तु मेरा मनोरथ राजा हैं अर्थात् श्रीराम हैं।

मति अति नीच ऊँचि रूचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी।।

छमिहहिं सज्ज्न मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई।।

इसी उपर्यूक्त क्रम में वह आगे कहते हैं कि मैरी बुद्धि अत्यन्त नीची है और मेरी चाह बहुत ऊँची है, इसी श्रीराम प्रेम में वह आगे व्यक्त करते हैं कि मेरी चाह तो अमृत स्वरूप श्रीराम को पाने की है, परन्तु जगत में जु ड़ ती छाछ भी मेरे भाग्य में नहीं। इसी क्रम में वह आग व्यक्त करते हैं कि वह सज्जन मनुष्य मेरी इस ढिठाई (ढिठोली) को क्षमा करेंगे और मेरे बाल वचनो को मन लगाकर (प्रेमपूर्वक) सुनेंगें।

जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरू माता।।

हँसिहहिं कू र कु टिल कुबिचारी। जे पर दू शन भू शनधारी।।

श्रीराम-साहित्य की उपर्युक्त पंक्ति के माध्यम से तुलसीदास जी कहते हैं कि जैसे बालक जब तोतले बचन बोलता है, तो उसके माता-पिता उसके वचनों को बहुत शालीनता के साथ सुनतें हैं, परन्तु क्रूर कुटिल और बुरे विचारों वाले लोग जो दूसरों के दोषों को ही भूषण रूप में लगते हैं वह मेरी श्रीराममयी 'रामकथा' की मेरी व्यथा पर हँसेगें।

इनकी अनन्त अभिलाषाओं की अभिव्यक्तिपूर्ण रचना का एक और उदाहरण शोधार्थी के द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है-

भाग छोट अभिलाशु बड़ करउँ एक बिस्वास।

पै हहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास।।

तुलसीदास जी उपर्युक्त रचना के माध्यम से अपने श्रीराम प्रेम के स्वरूप में कहते हैं कि मेरा भाग्य बहुत छोटा है और मेरी इच्छाएँ बहुत अनन्त हैं अर्थात् श्रीराम-स्वरूप की प्राप्ति की। परन्तु मुझे एक विश्वास है कि भगवान श्रीराम की 'रामकथा' को सुनकर सज्जन मनुष्य सभी सुखों की प्राप्ति करेंगें और दुष्ट मेरी व्यथा पर मेरी हँसी उड़ायेगें।

इसी क्रम में वह श्रीराम-साहित्य में आगे लिखते हैं –

[12] रामचरितमानस, तुलसीदास, साँई पब्लिकेशन, पृ0सं0-14

प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सु नि लागिहि फीकी।।

हरि हर पद रति मति न कु तरकी। तिन्ह कहुं मधुर कथा रघुबर की।।

उपर्युक्त पंक्ति में वह श्रीराम-प्रेम का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिन्हें न तो प्रभु के चरणों से प्रेम है और न तो अच्छी समझ ही है उनको यह भगवान श्री राम की 'रामकथा' सुनने में फीकी लगेगी। आगे वह कहते हैं कि जिनकी भावना में हरि (भगवान विष्णु) और भगवान (शिव) के चरणों में ध्यान, प्रीत और भक्ति-भावना है और जिनकी बुद्धि कुतर्क करने वाली नहीं है उन्हें मेरे अराध्य रघुनाथ, मेरे रघुवर की 'रामकथा' सुनने में मधुर, मीठी लगेगी।

इसी क्रम में वह आगे लिखते हैं कि-

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।।

मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी।।

इसी प्रकार महाकवि तुलसीदास जी वर्णन करते है कि यही मेरी कविता है जिसमें भगवान श्रीराम का उदार नाम है अर्थात् इसमें रघुनाथ का उदार नाम है जो कि अत्यन्त ही पवित्र है, जो वेद-पुराणों का सार हैं और अमंगलों को हरने वाले हैं, जिन्हें पार्वती सहित साक्षात् भगवान शिव हमेशा जपा करते हैं, वहीं मेरे 'रघुनन्दन' श्रीराम हैं।

इसी क्रम में वह आगे लिखते हैं कि-

भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोउ।।

बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी।।

'राम-साहित्य' में उपर्यूक्त पंक्ति के माध्यम से कविवर तुलसीदास जी कहते हैं कि जो अच्छे कवि के द्वारा रची हुई चाहे कितनी भी अनूठी कविता ही क्यों न हो वह भगवान श्रीराम के नाम के बिना अधूरी है अर्थात् भगवान श्रीराम के बिना वह शोभा नहीं प्राप्त करती है जिस प्रकार से चन्द्रमा के समान मुखवाली सुन्दर स्त्री सभी प्रकार से सुसज्जित होने पर भी बिना वस्त्रों के शोभा नहीं प्राप्त करती है, ठीक उसी प्रकार चाहे किसी भी कवि की कितनी भी अनूठी कोई रचना क्यूँ न हो वह बिना 'श्रीराम' नाम के अधूरी ही है। उपर्युक्त उदाहरण में हम तुलसीदास जी श्रीराम के 'रामकथा-साहित्य' में राममय रचनाओं का ही उदाहरण पाते हैं। इसी क्रम में वे आगे लिखते हैं कि-

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।

गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की।।

प्रभु सु जस सं गति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी।

भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी।।

उपर्युक्त छन्दबद्ध रचना में तुलसीदास जी कहते हैं कि 'रघुनन्दन' श्रीराम की 'रामकथा' मानव जीवन के लिए कल्याणकारी है तथा कलियुग के पापों को हरने वाली है, मेरी इस भद्दी कविता की चाल, (यहाँ पर तुलसीदास जी ने अपने आपको तुच्छ, तथा अपनी रचना को भी तुच्छ मानते हुए, श्रीराम के स्पर्श रूपी प्रेम के प्रवाह का वर्णन किया है) पवित्र वाहिनी नदी (गंगा) की चाल की भाँति टेड़ी-मेड़ी है। प्रभु 'रघुनन्दन' श्रीराम के उक्त सुन्दर यश, गुणों के संग यह 'रामकथा' स्वरूपी कविता, सुन्दर तथा सज्जनों के मन को भानेवाली हो जाएगी। इसी क्रम में तुलसीदास जी आगे कहते हैं कि जिस प्रकार शमशान की अपवित्र राख भगवान शंकर, महादेव के अंग से स्पर्श होते ही सुहावनी लगने लगती है जो मात्र महादेव के स्पर्श और स्मरण करते ही पवित्र हो जाती है। ठीक इसी प्रकार अपनी तुच्छ रचना (रामकथा) का स्मरण करने मात्र से ही मानव जीवन के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो जाती है। तुलसीदास जी इसी क्रम में आगे लिखते हैं-

प्रिय लागिहि अति सबहिमम भनिति राम जस संग।

दारू बिचारू कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग।।

उपर्युक्त पंक्तियों में महाकवि तुलसीदास जी विवेचन करते हैं कि भगवान श्रीराम के यश रूपी स्वरूप के संग उपर्युक्त मेरी यह 'श्रीराम-साहित्यक' कविता आप सभी को अत्यन्त लोकप्रिय लगेगी। जिस प्रकार से मलय पर्वत के संग से मात्र 'काष्ठ' रूपी 'चन्दन' की प्राप्ति से वह 'वन्दनीय' हो जाता है तो कोई 'काष्ठ' की तुच्छता का विचार नहीं करता है। अर्थात् यह 'चन्दन' रूपी 'काष्ठ' की ही विशेषता है जिससे 'चन्दन' की प्राप्ति होने पर मष्तिष्क में आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है।

इसी क्रम में तुलसीदास जी लिखते है कि-

जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरिच बर ताग।

पहिरहिं सज्जन बिमल उर शोभा अति अनुराग।।

उक्त पंक्ति के अनुसार तुलसीदास जी 'रामस्वरूप' का चित्रण करते हुए कहते हैं कि उनकी कवितारूपी, मुक्तमणियों को युक्ति से भेदकर, फिर भगवान श्रीराम के 'रामचरित्ररूपी' सुन्दर तागे में पिरो कर सज्जन लोग अपने निर्मल हृदय में धारण करते हैं जिससे उन्हें अत्यन्त आनन्द की अनुभूति होती है। अर्थात् जिससे उन्हें भगवान श्रीराम के अनुरागस्वरूपी शोभा की प्राप्त होती है, जो अत्यान्तिक प्रेम को प्राप्त होते हैं।

इसी क्रम में वे आगे लिखत हैं कि-

कवि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ।।

कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा।।

उपर्युक्त पंक्ति में तुलसीदास जी 'श्रीराम-सहित्य' में वर्णन करते हैं कि मैं न तो कोई कवि हूँ और न ही मैं चतुर कहलाता हूँ, मैं तो मात्र अपनी बुद्धि के अनुसार ही 'रघुनंदन' श्रीराम के गुणों का व्याख्यान करता हूँ। इस प्रकार वह आगे वर्णन करते हैं कि कहाँ तो भगवान श्रीराम का स्वरूप है और कहाँ उनका विशाल चरित्र है, और कहाँ इस संसार में आसक्तत मेरी बुद्धि!

इसी क्रम में वह आगे रामस्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि-

जेहिं मारूत गिरि मेरू उड़ाहीं। कहहु तू ल कहि ले माहीं।।

समु झत अमित राम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई।।

उपर्युक्त क्रम में कविवर तुलसीदास जी वर्णन करते हैं कि जिस प्रकार अत्यधिक हवा के प्रवाह में सुमेरू पर्वत तक उड़ जाते हैं, तो उक्त वेग से प्रवाहित हवा में रूई कै से टिकेगी आखिर उसका क्या ऑचित्य है। इसी क्रम में भगवान श्रीराम की असीम सम्प्रभुता को समझकर उनके चरित्र की 'रामकथा' को रचने में मेरा मन बहुत हिचकता है। अर्थात् उनके अलौकिक स्वरूपों का वर्णन मैं अपनी रचना में किस प्रकार से कर सकता हूँ मेरा प्रभु के समक्ष कोई औचित्यक, स्वरूप ही नहीं है आखिर मेरी औकात ही क्या है। मुझे श्रीराम की 'रामकथा' के अलौकिक स्परूप का चित्रण करते हुए संकोच हो रहा है।

इसी क्रम में मैं महाकवि तुलसीदास जी की रचना की पंक्ति के साथ उपर्यूक्त अनुसंधान को यहीं पर विराम देना चाहूँगा।

चरन कमल बंदउँ तिन्ह के र। पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे।।

कलि के कबिन्ह करउँ परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा।।

उक्त संदर्भित पंक्ति में 'हिन्दी-साहित्य' के सम्राट कहे जाने वाले महाकवि तुलसीदास जी ने वर्णन किया है कि मैं उन समस्त श्रेष्ठ कवियों के चरणों का वन्दन करता हूँ मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ और विनती करता हूँ, वे मेरे सभी मनोरथों को पूर्ण करें और कलियुग के उन सभी कवियों को भी मैं प्रणाम करता हूँ कि जिन्होंने भगवान श्रीराम के रामस्वरूप का वर्णन, 'रामकथा-साहित्य' का गुणगान, अपनी रचनाओं में किया है।

जे प्राकृत कवि परम सयाने। भाषा जिन्हें हरि चरित बखाने।।

भय जे अहहिं जे होइहहिं आगें। प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागें।।

अतः अन्त में मै पुनः उन कवियों का जो बड़े बुद्धिमान और प्राकृत हैं, जिन्हों ने हिन्दी भाषा-साहित्य में हरि अर्थात् भगवान श्रीराम के चरित्र, स्वरूपों का वर्णन किया है, और ऐसे कवि जो पहले हो चुके हैं, और जो इस समय वर्तमान में हैं और जो आगे होंगे, उन सभी को मैं सारा कपट त्यागकर आदरपूर्वक प्रणाम करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी का आशीर्वाद हमेशा मुझे शोधार्थी को प्राप्त होता रहे।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के फलस्परूप हम कह सकते हैं कि 'हिन्दी-साहित्य' में सम्राट, महाकवि श्रीरामभक्त 'तुलसीदास' जी ही हैं जिनकी उपर्युक्त कुछ ही रचनाओं से स्पष्ट है कि इनकी श्रीराममयी, रामकाव्यधारा रूपी प्रवाह, निरन्तर प्रवाहित होता रहा। सम्पूर्ण श्रीराम भक्ति-साहित्य उनकी अनुदित अमुल्य रचनाएँ हैं जिनका बौध करने मात्र से हमें भगवान श्रीराम के साक्षात् वास्तविक स्वरूप के दर्शन होने की अनुभूति प्राप्त हो जाती है। अतः हिन्दी भक्ति-साहित्य में हिन्दी साहित्य के सम्राट महाकवि तुलसीदास जी का योगदान अमुल्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1- अयोध्या का रावण और लंका के राम, डॉ. दिनकर जोशी और नवनीत ठक्कर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0-1,2

2- हिन्दी साहित्य का इतिहास और उसकी समस्याएँ, डॉ. योगन्द्र प्रताप सिंह, वाणी प्रकाशन, पृ0सं 0-206

3- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, आठवां संस्करण, पृ0सं0-319, 320, 332, 323

4- भारतीय साहित्य पर रामायण का प्रभाव, डॉ. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, आर्य प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0सं0-9

5- हिन्दी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0सं 0-57,95

6- रामचरितमानस, तुलसीदास, साँई पब्लिकेशन, पृ0सं 0-14

7- विश्वभाषा साहित्य और रामकथा, डॉ. सरोज गुप्ता, अनुज्ञा बुक्स पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण-2017, पृ0सं0-94,101

Corresponding Author

Dr. Okendra*

PhD Hindi Literature, Department of Hindi, Uttarakhand

mr.okendra@gmail.com